JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

कोविड-19 का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

डॉ विजय प्रकाश मिश्रा
असिस्टेंट प्रोफेसर
व्याहारिक अर्थशास्त्र विभाग
जय नारायण पी जी कॉलेज लखनऊ ।

परिचय:–चीन के बुहान शहर में दिसंबर 2019 में एक नए वायरस कोरोना को एक महामारी की संज्ञा दी गई है इसने समाज को अस्थिरता प्रदान की व्यावसायिक गतिविधियों में अवरोध उत्पन्न किया जिससे देश में बड़ी मात्रा में बेरोजगारी की स्थिति उत्पन्न हुई इसकी तेजी से फैलने की स्थिति के कारण विश्व में आर्थिक गतिविधियों को बहुत धीमा कर दिया है इस महामारी ने पूरी दुनिया में बहुत व्यवधान उत्पन्न किया जिससे बहुत नुकसान हुआ है विकासशील से लेकर विकसित देश कोई भी इसकी मार से बच नहीं पाए हैं इसनेअर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों में किसी ने किसी तरीके से कम या ज्यादा प्रभावित किया है यहां तक की एक ही क्षेत्र में काफी गैर अनुपातिक प्रभाव भी पड़ा है लोगों को मानसिक बीमारी घरेलू हिंसा तथा बेरोजगारी में वृद्धि के कारण सामाजिक प्रभाव भी गंभीर हैं लेकिन साथ ही दूसरी तरफ स्वच्छ पर्यावरण बेहतर जल गुणवत्ता वन्य जीवन के संदर्भ में सकारात्मक प्रभाव भी देखे जा सकते हैं।

प्रस्तावना:– कोविद-19 महामारी ने भारतीय अर्थव्यवस्था को बहुत बुरी तरीके से प्रभावित किया है जिसके कारण भारत में संकारात्मकता संक्रामकता को रोकने के लिए पूरे देश में प्रधानमंत्री जी ने एक साथ लॉकडाउन लगाया था जिसके परिणाम स्वरूप देश में रोजगार व व्यवसाय बहुत बुरी तरीके से प्रभावित हुए हैं विश्व बैंक ने जून 2020 में भारत की सकल घरेलू उत्पाद दर 3.2 एक रहने का अनुमान लगाया है कोरोना की पहले झटके से लड़खड़े अर्थव्यवस्था को पूरी तरीके से संभाल भी नहीं पाई थी की दूसरी लहर ने इसको बुरी तरीके से प्रभावित किया है क्योंकि इससे भारत के आर्थिक विकास की उम्मीद पर पानी फिरने लगा है क्योंकि इस महामारी में करोड़ों लोगों की नौकरी जाने और बैंकों में एनपीए बढ़ने से देश को वित्तीय सको से उबर में बहुत मुश्किल आ रही है आर्थिक जानकारों का कहना है की चेक बाउंस में मामलों में बढ़ोतरी से लेकर गिरवी आभूषणों की बिक्री इस महामारी की दूसरी लहर से हुए आर्थिक नुकसान की सीमा को दर्शाता है कोविद-19 ने भारतीय अर्थव्यवस्था की छुपी हुई कमियों को उजागर कर दिया है अप्रैल से जून 2020-21 में बेरोजगारी दर 7.2 से बढ़कर 12% तक भारी बढ़ोतरी हुई है इस महामारी ने देश के विभिन्न क्षेत्रों को प्रभावित किया है।

फार्मास्यूटिकल क्षेत्र:- कोरोना महामारी से खासकर चीन से आयातित कच्चे सामग्री की कीमत इस दौरान बहुत ही बढ़ गई, आयात पर अत्यधिक निर्भरता और उद्योगों में श्रम की अनुपलब्धता के कारण सबसे ज्यादा आवश्यक जेनेरिक दावों की आपूर्ति ही प्रभावित हुई है, सरकार द्वारा निर्यातों पर प्रतिबंधों के कारण ये उद्योग बहुत ही दयनीय

स्थिति से गुजर रहा है, लेकिन कोरोना महामारी के बाद से यह उद्योग बहुत ही तीव्र गति से बढ़ रहा है क्योंकि भारत जेनेरिक दावों का सबसे बड़ा उत्पादक है 2020 की शुरुआत में 55 बिलियन डॉलर के बाजार आकार के साथ में तेजी से बढ़ रहा है।

खाद्य और कृषि क्षेत्र:- भले ही कृषि उत्पादन प्राथमिक क्षेत्र में आता है लेकिन लॉकडाउन के दौरान किसी पदार्थ के खरीद व उपयोग पर बहुत नकारात्मक प्रभाव पड़ा क्योंकि देश के अंदर होटल रेस्टोरेंट ठेले चाट यह सब लोगों ने खरीदने बंद कर दिए थे और यह सब बंद भी हो गए थे जिसके कारण इसकी बिक्री बहुत कम हो गई हालांकि कई राज्यों ने पहले से ही दूध फल सब्जी आदि के लिए मुफ्त आवावजाही की व्यवस्था की थी फिर भी आवाजाही पर प्रतिबंध और खाद्य रसद वाहनों के चलने पर प्रतिबंध के कारण इन पर खास प्रभाव पड़ा इसका कारण था की फल व सब्जी की दुकान बिलकुल बंद थी लेकिन सरकार ने किसानों के हित को ध्यान में रखते हुए हर 3 महीने पर उनको 6000 उनके खाते में ट्रांसफर किया जो सरकार का एक बड़ा कदम था जिससे कृषि क्षेत्र में सकारात्मक बनी रही यह सरकार का एक बहुत ही सकारात्मक पहलू था।

डॉक व दूर संचार क्षेत्र:- भारत में कोविड-19 के पहले ही दूरसंचार क्षेत्र में काफी क्रांतिकारी परिवर्तन होना शुरू हो गए थे वर्क फ्रॉम होम कलर का विकसित होना 4G का आना ब्रॉडबैंड सेवाओं की मांगों में तेज वृद्धि का प्रमुख कारण बना महामारी के दौरान वर्क फ्रॉम होम कलर में भारी वृद्धि हुई देश के सकल घरेलू उत्पाद में यह क्षेत्र कोरोना से पहले 6:30 प्रतिशत योगदान देता था लेकिन कोरोना के बाद इसका योगदान लगभग 10% हो गया है जो इसकी मांग और इसकी उपयोगिता में वृद्धि को दर्शाता है इसमें 6 करोड़ से ज्यादा लोग रोजगार प्राप्त कर रहे हैं हालांकि सरकार में अभी भी इस क्षेत्र में विस्तार की और गुंजाइश बाकी है नई कंपनियों को स्पेक्ट्रम आवंटित करके सरकार इस क्षेत्र का और विकास कर सकती है।

गैस और तेल:- विश्व में अमेरिका और चीन के बाद भारत ऊर्जा का सबसे बड़ा उपभोक्ता है हालांकि महामारी में लॉकडाउन के कारण परिवहन में ईंधन की मांग में बहुत जबरदस्त कमी हुई है क्योंकि लॉकडाउन में दो पहिया चार पहिया ऑटो व बड़ी गाड़ियों के चलने पर प्रतिबंध के कारण पेट्रोल और डीजल की मांग में जबरदस्त गिरावट हुई है समान और यात्रियों की आवाज आई भी रुक गई थी इस दौरान कच्चे तेल की कीमतों में भी भारी गिरावट हुई सरकार के राज्य घाटे में बढ़ोतरी हुई इसको काम करने के लिए सरकार ने उत्पाद शुल्क और रोड सेस में भी वृद्धि की है।

पर्यटन और नागरिक उड्डयन:- भारत जैसे विकासशील देश में विमान और पर्यटन व्यवसाय काफी महत्वपूर्ण है वित्तीय वर्ष 2018-19 में पर्यटन और नागरिक उड्यान विभाग ने साढे 5 करोड लोगों को सेवाएं प्रदान की थी कोविद-19 के कारण पर्यटक और नागरिक उड्यान विभाग भी काफी बड़ी काफी बड़ी मात्रा में प्रभावित हुआ है लॉकडाउन और रोक यात्रा पर रोक के कारण उड्यान और पर्यटन दोनों ही उद्योगों को भारी नुकसान हुआ है देश की जीडीपी में इसका लगभग 7% योगदान है किंतु महामारी और प्रतिबंधों के कारण यह उद्योग बहुत ही खराब दशा में है परंतु अब या उद्योग धीरे-धीरे पुनः उन्नति की ओर बढ़ रहा है।

अन्य क्षेत्र:– कारपेट क्षेत्र में काफी लोगों की नौकरियां चली गई, **जिस कारण**

- छोटे उद्योगों को ज्यादा नुकसान हुआ क्योंकि उनको अपने कर्मचारियों को वेतन देने के लिए बहुत अधिक धन नहीं था।
- नए कर्मचारियों से यह अपेक्षा की गई कि वह स्वयं सीख कर उत्पादकता पर ध्यान लगाए क्योंकि कंपनियां अब प्रशिक्षण करने में अपना समय व धन नहीं गवना चाहती थी।
- महामारी के दौरान लोगों का वेतन देने का समय तारीख व रकम भी तय नहीं।

निष्कर्ष- कोरोना महामारी के कारण उत्पन्न हुए बड़े पैमानों की रूकावटों को देखते हुए स्पष्ट है किया मंडी वास्तविक मंदिर से बहुत ही अलग है भारत भी अपनी अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने के लिए भरपूर कोशिश कर रहा है बढ़ती मांग और व्यापार में बढ़ोतरी से बेरोजगारी में कमी की जा सकती है हालांकि इसके कुछ सकारात्मक प्रभाव भी देखने को मिले हैं जैसे वातावरण व पर्यावरण की स्वच्छता पानी की गुणवत्ता वन्य जीवन पर इन प्रभावों की स्थिरता पोस्ट लॉकडाउन और लोगों के व्यवहार और आदतों पर निर्भर है अर्थशास्त्रियों का मानना है कि देश की जो जीडीपी दर और राजकोषीय छोटे की घाटे की परवाह किए बिना सरकार को अर्थव्यवस्था में और अधिक व्यय करने की जरूरत है वास्तव में समाज के कमजोर वर्गों और क्षेत्र और गैर आवश्यक क्षेत्र पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है जो की महामारी के कारण मांग संगठन में बुरी तरीके से प्रभावित हुए हैं समावेशी और नवोन्मशी उपाय समय की मांग है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:–

1. योजना
2. कुरुक्षेत्र
3. भारतीय अर्थव्यवस्था विशेषांक
4. इंडिया टुडे
5. नवीनतम संयुक्त राष्ट्र व्यापार रिपोर्ट
6. नवभारत टाइम्स जुलाई 2020